भारतीयों का

भारत

से परिचय...

फोर्ट्रेस इंडिया

"एक राष्ट्र का उसकी आत्मा से पुनर्मिलन।"

फोर्ट्रेस इंडिया क्या है?

फोर्ट्रेस इंडिया एक राष्ट्रीय आंदोलन है जो भारतीयों — विशेषकर युवाओं — को उस ज़मीन, इतिहास, इकोलॉजी और नैतिक मूल्यों के साथ पुनः जोड़ता है जो भारत एवं भारतीयता को परिभाषित करते हैं। यह किसी समृद्ध राष्ट्र के लिए आवश्यक चार प्रमुख कार्यक्षेत्रों को एक साथ सम्बद्ध करता है। ये कार्यक्षेत्र सामूहिक रूप से भारत को केवल नक्शे पर चिन्हित भू-भाग के स्थान उत्तरपूर्व एक जीवन्त एवं प्रगतिशील सभ्यता रूप में परिभाषित करते हैं।

1. **भौगोलिक ज्ञानार्जन — भारतीयों को भारत से परिचित कराना**

भारत के भौगोलिक विस्तार व प्रकार को समझे बिना भारत की रक्षा करना असम्भव है। फोर्ट्रेस इंडिया की शुरुआत द **नॉर्थईस्ट ट्रिलॉजी** से होती है, जो 'भारत के मानचित्र में रिक्त-स्थानों को अंकित करने' का एक ऐतिहासिक प्रयास है। यह उत्तर-पूर्व को उसकी पूरी जटिलता के साथ प्रदर्शित है — इसके लैंडस्केप, लोग और भू-राजनीति — एक ऐसा क्षेत्र जो भारत की एकता और सुरक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है।

हर शैक्षणिक संस्थान की लाइब्रेरी के लिए यह ज़रूरी है, यह सूविज्ञ नागरिकता की नींव रखता है।

2. **सैन्य इतिहास — भारत की लड़ाइयों और सीमाओं की कहानियाँ**

प्राचीन भारत से आधुनिक भारत के सैन्य इतिहास को क्रमबद्ध संक्षिप्त इतिहास योद्धा-I, योद्धा-II, 1962-जंग का साया, 1965-पश्चिम में उगता सूरज, सियाचिन का लम्बा पथ जैसी पुस्तकों में सारांशित किया गया है। फोट्रेस इंडिया स्वतन्त्रता प्राप्ति से कारगिल युद्ध तक के सैन्य यात्रा के इतिहास को भी लिपिबद्ध करता है।

ये केवल समय-समय पर लड़े गये युद्धों की कहानियाँ नहीं है वरन् नेतृत्व, बलिदान एवं राष्ट्रीय चरित्र को मूर्तरूप देने का अध्ययन है।

3. **पर्यावरण — वन्य भारत का ज्ञानार्जन**

भारत के जंगल इसके सबसे सच्चे रक्षक है — संतुलन, पहचान और नवीनीकरण का एक अभयारण्य। ***फोर्ट्रेस इंडिया*** का पर्यावरणीय कार्यक्षेत्र **द इंडियन क्वार्टेट** के माध्यम से सामने आता है, जो भारत के वन्य परिदृश्य और जैव-पारिस्थितिकी तन्त्र का उत्सव मनाने वाले गहन कार्य का संकलन है।

इसमें में तीन-भाग वाली **अरुणाचल वन्यजीवन सीरीज़** भी सम्मिलित है, जो पूर्वी हिमालय की प्राकृतिक और सांस्कृतिक भव्यता को प्रदर्शित करने वाली एक असाधारण प्रयास है। जल्द ही **दुनिया भर के सभी राष्ट्राध्यक्षों** के साथ साझा की जाने वाली ये पुस्तकें इस सीमावर्ती राज्य के पर्यावरणीय और रणनीतिक महत्व दोनों को रेखांकित करती है।

4. **संस्थागत अखंडता — एक राष्ट्र की नैतिक वास्तुकला**

राष्ट्र केवल ताकत से नहीं, — बल्कि कार्यप्रणाली, नेतृत्व और सच्चाई में विश्वास से बनते हैं। फोर्ट्रेस इंडिया केस स्टडी, निबंध और संवादों के माध्यम से संस्थागत अखंडता के इस संकट की जांच-परख करता है जो आत्मसंतुष्टि को चुनौती देते हैं और सुधार का आह्वान करते हैं।

युवाओं के लिए, यह चिंतन और ज़िम्मेदारी प्रदान करता है — सवाल करने का साहस, और पुनर्निर्माण की इच्छा जाग्रत करता है। जैसे-जैसे अभियान गतिमान रहता है, प्रतिभागियों और भागीदार संस्थानों को विशेष अपडेट और शैक्षणिक अवसर प्राप्त होते हैं।

फोर्ट्रेस इंडिया केवल रक्षा दीवारे बनाने के विषय में नहीं है वरन् यह आन्तरिक ताकत निर्माण करने से सम्बन्धित है। हमारे देश की सुरक्षा सिर्फ़ सैनिक की ज़िम्मेदारी नहीं है। यह हर उस नागरिक से आरम्भ होती है जो उस ज़मीन को समझता है जिस पर हम रहते हैं, उस पर्यावरण की रक्षा करता है जो हमें जीवन देता है, उन संस्थाओं को बनाए रखता है जो हमारा मार्गदर्शन करती हैं, और उस ज्ञान को महत्व देता है जो हमें जोड़ता है।

मैंने सीमा पर एक जवान की आँखों में और बाढ़ के बाद फिर से बसा रहे एक गाँव वाले के जोश में भारत की हिम्मत देखी है। वही जोश अब हमारा मिलकर किया गया मिशन बनना चाहिए।

फोर्ट्रेस इंडिया जागने का एक निमन्त्रण है — एक ऐसे देश को फिर से बनाने का जो भूगोल पर आधारित हो, पारिस्थिकी (Ecology) से सुदृढ़ हो, ईमानदारी से मज़बूत हो, और समझ के ज्ञान से भरा हो।

इस आन्दोलन में भागीदारी करे। एक सुरक्षित, चिरस्थायी, आत्मनिर्भर भारत का हिस्सा बनें — एक ऐसा भारत जो हमेशा बना रहे।

– जनरल विजय कुमार सिंह

राज्यपाल मिज़ोरम, पूर्व सेनाध्यक्ष

फोट्रेस बनो। बदलाव करो।

सलाहकार समिति

जनरल (डॉ.) विजय कुमार सिंह
PVSM, AVSM, YSM

एडमिरल करमबीर सिंह
PVSM, AVSM

एयर चीफ मार्शल
राकेश कुमार सिंह भदौरिया
PVSM, AVSM, VM

लेफ्टिनेंट जनरल
कैवल्य त्रिविक्रम परनाइक
PVSM, UYSM, YSM

लेफ्टिनेंट जनरल
(डॉ.) कोनसम हिमालय सिंह
PVSM, UYSM, AVSM, YSM

रणधीर (बिट्टू) सहगल
डॉ. सत्यनारायण भीसेट
राजिंदर पाल देवगन
वल्लभ भंसाली

फोर्ट्रेस इंडिया

एक सुरक्षित, चिरस्थायी राष्ट्र के विचार पुनः आत्मसात करने का अभिनव प्रयास

– शिव कुणाल वर्मा द्वारा

फोर्ट्रेस इंडियाः देश से एक अपील

फोर्ट्रेस इंडिया कोई नारा नहीं है। यह जागने का एक आवाह्न है— यह पहचानने का कि हमारे लोकतन्त्र की रक्षा अब सिर्फ़ सैनिक का काम नहीं है। राष्ट्रीय सुरक्षा अब इस पर भी उतना ही निर्भर करती है कि हम अपनी ज़मीन, अपने पर्यावरण, अपने संस्थानों और हर एक के बारे में अपनी समझ के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

हर भारतीय को इस विचार में एक भागीदार बनना होगा। युद्ध और शांति, सुरक्षा और उत्तरजीविता (Survival) के बीच की विभाजन रेखाऐं तेज़ी से धुंधली हो रही हैं। लोकतन्त्र की ताकत हथियारों या बयानबाज़ी पर नहीं, बल्कि उसके लोगों के अनुशासन, दूरदर्शिता और एकता पर निर्भर करती है।

भूगोल (Geography) : पहली सीमा

हमारी भौगोलिक स्थिति हमारे लिए वरदान भी है तथा चेतावनी भी है। सियाचिन के ग्लेशियर से लेकर सुंदरबन के डेल्टा तक, ज़मीन बताती है कि हम कौन हैं और हमें किसकी रक्षा करनी है। फिर भी हमने भूगोल— जो राष्ट्र का नेतृत्व करने की कला की नींव है— को लोगों की सोच से गायब होने दिया है।

फोर्ट्रेस इंडिया के पुनर्निर्माण के लिए, हमें भौगोलिक साक्षरता को पुनः ज्ञान की मुख्यधारा में लाना होगाः इसके लिए आवश्यक है– कि कक्षाओं में मानचित्र, शासन-प्रशासन में भू-भाग की विस्तृत जानकारी तथा मातृभूमि के प्रति सम्मान का- समावेश हो। हर नागरिक को अपने पैरों के नीचे की ज़मीन को समझना होगा— नदी का हर मोड़ इतिहास समेटे हुए है, हर लापरवाही भरा बदलाव हमारी नियति बदल सकता है।

फोर्ट्रेस इंडिया का निर्माण तब प्रारम्भ होता है जब हम ज़मीन को एक जीवन्त शिक्षक मानते हैं— रियल एस्टेट की तरह नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्य की तरह।

पर्यावरणः छिपी हुई सुरक्षा

हिमालय हिल रहा है; नदियाँ मर रही हैं; जंगल शांत हो रहे हैं। पारिस्थितिकीतन्त्र से होने वाला प्रत्येक ह्रास हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा में भी सेंध है। उत्तराखंड में बादल फटना, सिक्किम में भूस्खलन, असम में बाढ़ — ये अब 'प्राकृतिक आपदाऐं' नहीं हैं वरन् ये जागरूकता की नाकामियाँ हैं।

फोर्ट्रेस इंडिया के निर्माण के लिए आवश्यक है कि अब पर्यावरण सुरक्षा रक्षा नीति का हिस्सा बने। सड़कों, बेस, डैम और बस्तियों को अब सार्मारक ज़रूरत के साथ-साथ पारिस्थितिकीय समझदारी की भी परीक्षा पास करनी होगी।

जो सैनिक मॉनसून में कीचड़ भरी मिट्टी में खाई खोदता है, वह समझता है कि नीतिनिर्धारकों को अब क्या स्वीकार करना चाहिए— अब मिट्टी को राज्य की तरह सुरक्षित रखने का समय आ गया है।

पर्यावरण की रक्षा करना अब केवल परोपकार नहीं है; यह राष्ट्रीय सुरक्षा की प्रथम आवश्यकता है।

संस्थानः छिपे राष्ट्रप्रहरी

अगर भूगोल भारत का शरीर है और पर्यावरण उसकी सांस है, तो हमारे संस्थान उसका हृदय हैं। जब संस्थान कमज़ोर होते हैं, तो देश टूटते हैं— चुपचाप, अंदर से। संस्थागत ईमानदारी का खत्म होना हमारी सीमाओं पर किसी भी दुश्मन सेना से धीमा लेकिन ज्यादा खतरनाक शत्रु है।

हर नागरिक को, चाहे वह किसी भी भूमिका में हो, संस्थागत सहनता के विचार का बचाव करना चाहिए— स्कूल जो सच सिखाते हैं, न्यायालय जो उसे बनाए रखते हैं, प्रेस जो उसे रिपोर्ट करता है, और सिविल सर्विस जो उसे मानती है। सशस्त्र सेनाऐं अब भी उदाहरण प्रस्तुत करती हैं कि यह कैसा दिखता हैः खुद से पहले सेवा, प्रदर्शन से ज्यादा अनुशासन। वह सोच अब पुनः हर सार्वजनिक स्थान पर आनी चाहिए।

कोई राष्ट्र टूटी हुई नींव पर नहीं टिक सकता। संस्थागत ईमानदारी को फिर से बनाना ही देशभक्ति की असली परीक्षा है।

ज्ञानः अदृश्य हथियार

युद्ध वे लोग आँख बंद करके लड़ते हैं जो इनका कारण समझनें में सक्षम नहीं हैं। दशकों से, हमने सूचना को ज्ञान से भ्रमित किया है। वास्तविक ज्ञान मानचित्र को दिमाग से, सैनिक को नागरिक से, और कक्षाओं को कमांड पोस्ट से जोड़ता है। ज्ञान युद्ध को अन्तिम विकल्प बनाता है। हमारा इतिहास और भूगोल पाठ्यक्रम में वापस आना चाहिए, रटे-रटाए अध्याय के रूप में नहीं, बल्कि ऐसी कहानियों के रूप में, जो बताएं कि हम क्यों चिरस्थायी हैं और कैसे ज़िंदा हैं। एक पीढ़ी जो अपनी ज़मीन और उसके रक्षकों को समझती है, वह नारों के साथ नहीं, बल्कि समझ के साथ परिपक्व होती है।

हर माता-पिता, शिक्षक और छात्र को खुद को देश के अधिगम नेटवर्क (Learning network) का हिस्सा समझना चाहिए। भ्रामक सूचनाओं के इस दौर में, समाज, देश व दुनिया में होने वाली घटनाओं के परिणामों की समझ रखना ही नई राष्ट्रसेवा है।

सशक्त भारत के निर्माण का आवाह्न

भारत की ताकत हमेशा से धैर्य रहा है। लेकिन बिना समझ के धैर्य भटकाव है। ***फोर्ट्रेस इंडिया*** रक्षा दीवारें बनाने के विषय में नहीं है; यह जागरूकता पैदा करने के का अभियान है— ज़मीन के बारे में, सीमाओं के बारे में, ज़िम्मेदारी के बारे में।

चुनौती बहुत बड़ी है, लेकिन साधन हमारे हाथ में हैं जिसमेंः

- **शिक्षक** कक्षा में मानचित्र और सैन्य इतिहास पर विचार-विनिमय कर ला सकते हैं।
- **समुदाय** खराब ज़मीन को ठीक कर सकते हैं और नदियों की रक्षा कर सकते हैं।
- **संस्थाएं** पारदर्शिता और योग्यता के ज़रिए पुनः विश्वास बना सकती हैं।
- **नागरिक** नेतृत्व से दूरदर्शिता की मांग कर सकते हैं, केवल तात्कालिक निर्णयों द्वारा समस्याओं को अनिर्णीत छोड़ने की छवि की नहीं।

सियांग से श्योक तक, नीलगिरी से कच्छ के रण तक, इस देश का हर कोना धैर्य और नई जान डालने की कहानी कहता है। फोर्ट्रेस इंडिया उस कहानी को सुनने और उसे ज़िंदा रखने का प्रयास है।

अब हर भारतीय के लिए आगे आने का समय है— एक मूकदर्शक के रूप में नहीं वरन् समर्पित भागीदार के रूप में— उस राष्ट्र को फिर से बनाने में जो सच में अतीत की तरह शिखर पर विद्यमान रह सकेः एक ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण, एकजुट और ज़िम्मेदार गणतंत्र।

आज ही इस अभियान में शामिल हों। बात फैलाएं। दूसरों को भी इस बढ़ती हुई पहल का हिस्सा बनने के लिए बुलाएं। उम्र या लिंग कोई रुकावट नहीं है। साथ मिलकर, हम— बदलाव ला सकते हैं और निश्चित ही लायेंगे।

विंग कमांडर राकेश शर्मा, अशोक चक्र

विशिष्ट संकलन

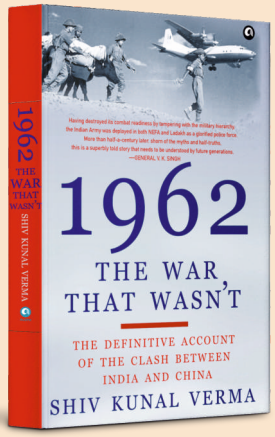

1962 : द वॉर दैट वाज़ नॉट (1962 : The was that was't)

भारत-चीन युद्ध की प्रमाणित घटनाऐं जो पूर्वी और पश्चिमी, दोनों तरह के टकराव की जगहों की परख करती है। सालों की फील्ड रिसर्च पर आधारित, यह पुस्तक भारतीय, चीनी, तिब्बती और ब्रिटिश नज़रियों को बड़े पैमाने पर एक ही कहानी, में पिरोती है जो नेहरू के समय से कहीं आगे तक जाती है।

ऐतिहासिक उद्धरणों और पहली नज़र की समझ से भरपूर, *1962: द वॉर दैट वाज़ नॉट* चौंकाने वाले नए सबूतों के ज़रिए सीमा विवाद प्रारम्भिक कारणों का वर्णन करती है और यह बताती है कि युद्ध और उसकी विरासत को कैसे समझा जाता है।

1965 : ए वेस्टर्न सनराइज़ (1965: A Western Sunrise)

1965 में, जब भारत चीन के साथ हार के दुःस्वपन से उबर ही रहा था, पाकिस्तान ने कच्छ के रण में कई जगह घुसपैठ के प्रयास आरम्भ कर दिये। यह एक बड़े युद्ध की शुरुआत थी। जुलाई तक, भारत ने पंजाब और कारगिल सेक्टर में अपनी सेनाएँ जुटा ली थीं, जबकि पाकिस्तान कश्मीर में *ऑपरेशन जिब्राल्टर* की तैयारी कर रहा था।

ए वेस्टर्न सनराइज़ भारत के सैन्य इतिहास के इस अहम काल-खन्ड को दिखाती है — एक ऐसा अभियान जिसने देश के इरादे को परखा और आने वाले वर्षों में उसकी सामरिक नीति को तय किया।

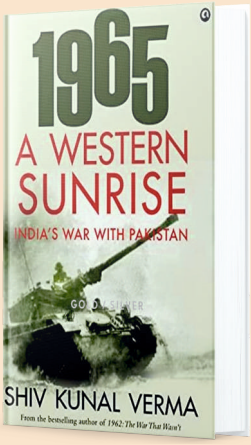

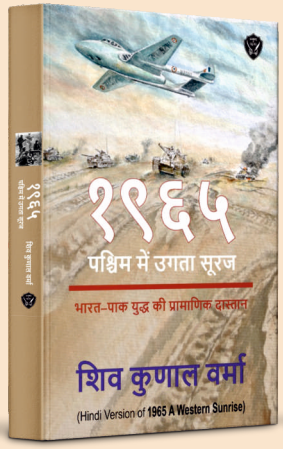

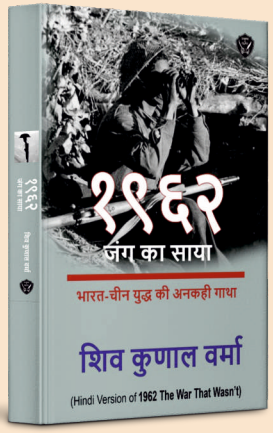

1962 - जंग का साया

1965 - पश्चिम में उगता सूरज

1962 और 1965 के युद्ध (हिंदी संस्करण)

इन ऐतिहासिक पुस्तकों के हिंदी संस्करण भारत की आज़ादी के बाद के इतिहास के दो अतिमहत्वपूर्ण घटनाक्रमों को आमजन तक पहुंचाते हैं। चीन और पाकिस्तान के खिलाफ 1962 और 1965 के युद्धों ने भारत की हिम्मत की परीक्षा ली और उसके सैनिकों के ज़बरदस्त हौसले को दिखाया।

बहुत ज्यादा फील्ड रिसर्च और दुर्लभ पुरालेख श्रोतो से लिए गए, ये शानदार चित्रों वाले संस्करण पाठको को लड़ाइयों के दिल तक ले जाते हैं— हिमालय के बर्फीले दर्रों से लेकर पंजाब के टैंकों से भरे मैदानों तक।

विशिष्ट संकलन

योद्धाः भारत का सचित्र सैन्य इतिहास (भाग- 1 और 2)
(Yodha: Illustrated Indian Military History)

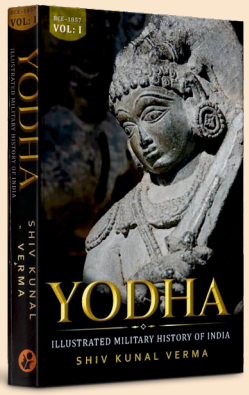

भारत का सैन्य इतिहास उतना ही बड़ा और चिरस्थायी है जितना यह भूक्षेत्र स्वयं है— बड़े पैमाने पर बड़ा, अनुभव में बहुत गहरा। *भाग-1* हमें *रामायण* और *महाभारत* के युद्धों से लेकर 1857 के महान विद्रोह तक ले जाता है— साहस, अनुशासन और परिवर्तन की एक गाथा जिसने भारतीय राष्ट्र को बनाया है।

योद्धाः भारत का सचित्र सैन्य इतिहास इस विशाल विरासत को वर्णित करने वाला पहला अभिनव प्रयास है— 1,600 से ज्यादा दुर्लभ चित्रों, मानचित्रों और तस्वीरों के ज़रिए जो *द क्राउन (1858)* से लेकर *द कारगिल वॉर (1999)* तक भारत की सैन्य पहचान के विकास को दिखाते हैं।

ये दोनों भाग कल, फील्ड रिसर्च और पुरालेखों की गहराई को मिलाकर एक विश्वसनीय, प्रमाणित एवं सचित्र इतिहास बनाते हैं— एक ऐसा संकलन जो क्षेत्र, लड़ाइयों और उन्हें लड़ने वालों के जज्बे को ज़िंदा कर देता है।

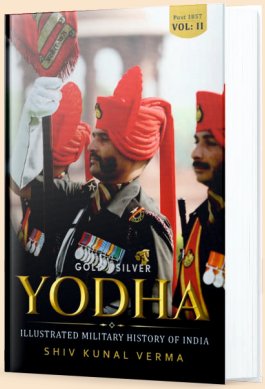

द लॉन्ग रोड टू सियाचिन (The Long Road to Siachin)

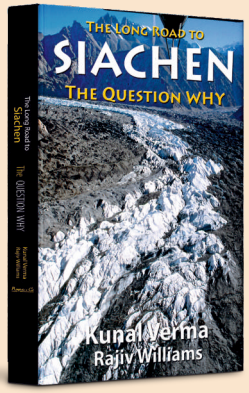

रूपा एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित, **द लॉन्ग रोड टू सियाचिन** आधुनिक भारतीय सैन्य इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण खंड में से एक को वर्णित करती है— सियाचिन ग्लेशियर को सुरक्षित करना, जो दुनिया का सबसे ऊंचा युद्धक्षेत्र है।

शिव कुणाल वर्मा की लिखी इस पुस्तक में, जिसका अन्तिम भाग **ब्रिगेडियर राजीव विलियम्स** ने मिलकर लिखा है, सियाचिन को उस वृहद्ध जियोपॉलिटिकल सामरिक क्षेत्र के रूप में दिखाती है जिस पर नियन्त्रण का मुकाबला लगभग दो सदी पहले शुरू हुआ था, जब सेंट्रल और साउथ एशिया में ग्रेट गेम खेला गया था।

तीनों सेनाओं के साथ फील्ड में अपने बहुत सारे अनुभव के आधार पर, वर्मा ने सामरिक समझ को कहानी के यथार्थ के साथ जोड़ा है। लद्दाख, जम्मू, ज़ांस्कर और काराकोरम से उनकी ज़मीनी जान-पहचान इस पुस्तक को उसका मूल आकार और प्रमाणिकता देती है। यह जितनी सहनशक्ति की कहानी है, उतनी ही उस इलाके की खोज भी है जिसने सैनिकों और नेताओं की कई पीढ़ियों को परखा है।

*फोर्ट्रेस इंडिया के पीछे **बौद्धिक और दृश्य वास्तुकला** - प्रत्येक पुस्तक ज्ञान के एक 'वर्टिकल' का प्रतिनिधित्व करती हैः भूगोल, सैन्य विरासत और भूमि का जीवंत अनुभव।*

ये पुस्तकें संयुक्त रूप से फोर्ट्रेस इंडिया के बौध एवं दृश्य वास्तुकला का जीवंत संकलन है।

विशिष्ट संकलन

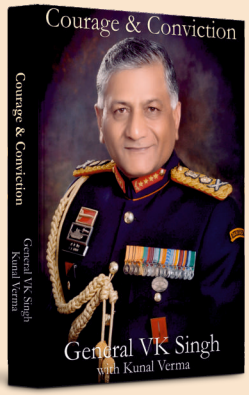

जनरल वी.के. सिंहः साहस और दृढ़ विश्वास (General V.K. Singh: Courage and Conviction)

जनरल वी.के. सिंह ने चार दशकों से ज्यादा समय तक भारतीय सेना में काम किया, तथा मई 2012 में सेनाध्यक्ष के पद से रिटायर हुए। अपनी पीढ़ी के सबसे सम्मानित अफ़सरों में से एक, उन्होंने बांग्लादेश और श्रीलंका में एक्शन देखा और काउंटर-इंसर्जेंसी युद्ध के सबसे जाने-माने अधिकारियों में से एक थे।

अपने सिद्धान्तवादी नेतृत्व के लिए पहचाने जाने वाले, वह अक्सर हथियारों की खरीद से लेकर विद्रोहियों के खिलाफ़ सेना की तैनाती तक के मुद्दों पर बेबाक राय रखते थे। **शिव कुणाल वर्मा** के साथ मिलकर लिखी गई उनकी कहानी, पाठको को इंडियन आर्मी के एक सैनिक की ज़िंदगी दिखाती है— कैडेट से कमांडर तक— और संस्था के अंदरूनी कामकाज और देश के राजनीतिक संगठन के साथ उसके रिश्ते के बारे में अनोखी जानकारी देती है।

असम राइफल्सः नॉर्थईस्ट के पहरेदार (Assam Rifles: Sentinels of North-East)

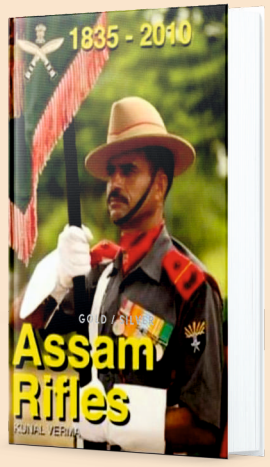

असम राइफल्स की 175वीं वर्षगांठ के अवसर पर, **शिव कुणाल वर्मा** ने *असम राइफल्स 1835–2010* को एक फिल्म और सचित्र पुस्तक, दोनों के रूप में बनाया था— भारत की सबसे पुरानी पैरा-मिलिट्री फोर्स का एक दृश्य इतिहास। 1835 से इसके विकास को दिखाते हुए, यह काम नॉर्थईस्ट के इतिहास और भूगोल का एक सफ़र बन गया— नागालैंड की धुंध से भरी पहाड़ियों और मणिपुर के जंगलों से लेकर मिज़ोरम की ऊँची पहाड़ियों तक।

फोटो खींचने और फिल्म बनाने का मतलब अक्सर उन इलाकों में जाना होता था जो देश के नक्शे पर खाली पड़े थे। इसका नतीजा न सिर्फ़ सैन्यबल की सेवा और बलिदान को श्रद्धांजलि थी, बल्कि उन लोगों और जगहों के साथ उसके गहरे जुड़ाव को भी श्रद्धांजलि थी जिनकी वह रक्षा करती है। इस पुस्तक को भारत के राष्ट्रपति द्वारा विमोचन किए जाने का विशिष्ट सम्मान मिला।

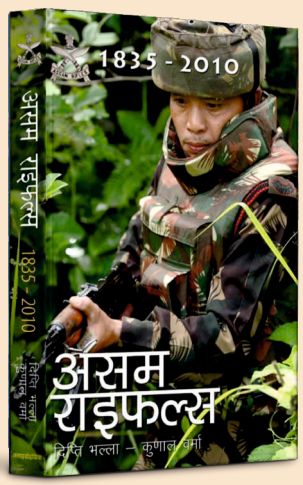

असम राइफल्सः हिंदी संस्करण और द्वितीय संस्करण

अंग्रेजी संस्करण की सफलता के बाद, **कैलिडोइंडिया** ने एक हिंदी संस्करण प्रकाशित किया, जिसने पुस्तक के संदेश को उन लोगों के घरों और दिलों तक पहुंचाया जिनका यह प्रतिनिधित्व करती है। इस संस्करण ने *असम राइफल्स* की विरासत को बढ़ाया, जिससे इसका इतिहास उत्तर-पूर्व और उससे आगे के परिवारों तक पहुंच गया।

2016 में, इसके महत्व को पहचानते हुए, इसका एक उन्नत द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया— जिससे असम राइफल्स की भूमिका को सरहद और देश के बीच रक्षक और पुल दोनों के तौर पर फिर से पक्का किया गया।

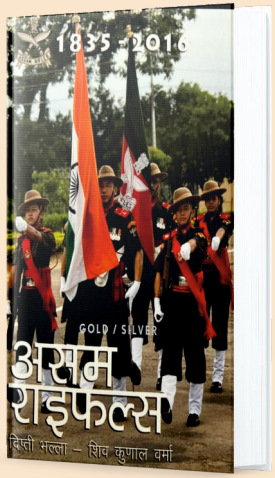

उत्तरपूर्व त्रयी (The North-East Trilogy)

द नॉर्थईस्ट ट्रिलॉजी तीन किताबों का एक लैंडमार्क सेट है जो भारत के सबसे कम जाने-पहचाने इलाकों में से एक— नॉर्थईस्ट— में एक अनोखी झलक दिखाता है। 2,300 से ज़्यादा चित्रों और बड़े फील्डवर्क के साथ, यह आज़ाद भारत में की गई सबसे बड़ी विज़ुअल और कहानी वाली यात्राओं में से एक है।

भाग-1 (पूर्वी हिमालय) सिक्किम, नॉर्थ बंगाल, असम और मेघालय को अन्वेषित करता है, जिसमें भूगोल को इतिहास, मिथ को दैनिक ज़िंदगी और धर्म को संस्कृति के साथ जोड़ा गया है।

भाग-2 (ब्रह्मा की रचना) अरुणाचल प्रदेश में और अंदर तक जाता है, जो ग्लेशियर, नदियों और बड़ी पहाड़ी दीवारों की ज़मीन है जहाँ लामावाद, जनजातीय जीवात्मवाद से मिलता है और महान ब्रह्मपुत्र अपना रास्ता बनाती है।

भाग-3 (चिल्ड्रन ऑफ द डॉन) नागालैंड, मणिपुर और मिज़ोरम से होते हुए नागा पटकाई पहाड़ियों से होते हुए चिन और अराकान योमा तक जाता है— उन बॉर्डर को रेखांकित करता है जहाँ भारत दक्षिण-पूर्वी एशिया से मिलता है। यह ट्रिलजी न सिर्फ़ नज़ारे को दिखाती है, बल्कि लोगों, धर्मों और सीमाओं के उस जीवंत सिलसिले को भी दिखाती है जो इस ज़रूरी इलाके को बनाते हैं।

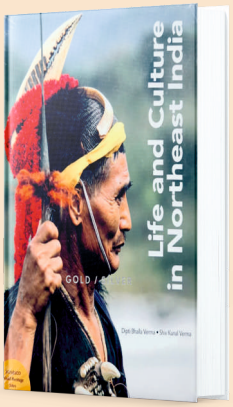

बड़े फ़ॉर्मेट वाला संस्करण बाद में मैपिन (अहमदाबाद) और एब्बेविल प्रेस (न्यूयॉर्क) ने प्रकाशित किया।

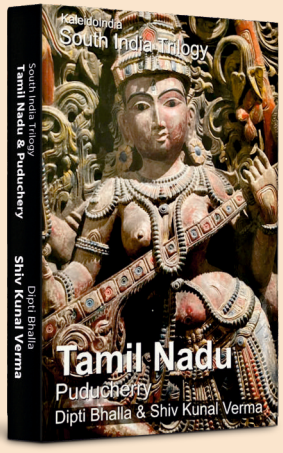

तमिलनाडु और पुडुचेरी (Tamilnadu and Puducherry)

द नॉर्थईस्ट ट्रिलॉजी की तरह बनी यह पुस्तक भारत के सबसे दक्षिणी राज्यों की एक शानदार झलक दिखाती है— एक ऐसा इलाका जहाँ विरासत और आधुनिकता एक साथ बहुत कम मिलते-जुलते हैं।

अपने मंदिरों, आर्किटेक्चर और तटीय बस्तियों के ज़रिए, यह किताब भारत की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक को दिखाती है— चोल और पल्लव विरासत से लेकर पुडुचेरी की फ्रेंच झलक तक।

"इस तरह का शानदार काम करने के सबसे करीब ब्रिटिश थे, जिनके मद्रास प्रेसीडेंसी के गजेटियर ने भी इसी प्रकार के प्रयास किए।"

विशिष्ट संकलन

द सैप रन्स पेरेनियल (वेस्टर्न अरुणाचल)

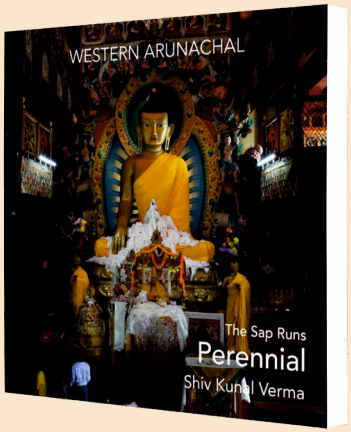

अरुणाचल ट्रिलॉजी का पहला भाग पश्चिमी अरुणाचल के पहाड़ों और घाटियों से होकर गुज़रता है, जहाँ कामेंग और तवांग नदियाँ लैंडस्केप और कहानी दोनों को बनाए रखती हैं।

यह मोनपा, शेरडुकपेन और आका समुदाय के जीवन को दिखाता है – ऐसे समुदाय जिनकी आस्था, कला और रीति-रिवाज प्रकृति के साथ अविरल वार्तालाप को का चित्राकंन हैं। तवांग के मठों से लेकर पक्के और ईगलनेस्ट के जंगलों तक, यह किताब एक ऐसे क्षेत्र को प्रदर्शित करती है जहाँ संस्कृति और संरक्षण एक साथ मिलते हैं।

द सैप रन्स पेरेनियल भारत के सबसे पश्चिमी हिमालयी इलाके की एक हमेशा रहने वाली तस्वीर पेश करता है – आस्था, हिम्मत और गहरी इकोलॉजिकल समझ की ज़मीन।

स्वर्ग की सीढ़ियाँ (केन्द्रीय अरुणाचल)

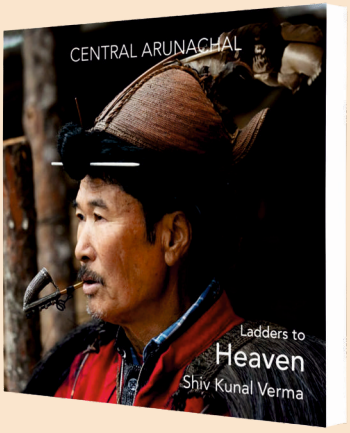

दूसरा भाग, *स्वर्ग की सीढ़ियाँ,* सियांग, सियोम और सुबनसिरी नदियों की बड़ी घाटियों से गुज़रता है— ये ऐसे इलाके हैं जहाँ कहानियाँ और भूगोल आपस में जुड़े हुए हैं।

यहाँ, आदि और गालोस के जीवात्मवादी आस्थाऐं, मेचुका और तूतिंग में मेम्बा और खम्पा लोगों की बौद्ध शांति के साथ सह अस्तित्व में विद्यमान है। हवाई तस्वीरों और दिल को छू लेने वाले पाठ्य के माध्यम से, यह पुस्तक किताब अरुणाचल को जंगल और पवित्र जगह दोनों के तौर पर प्रदर्शित है— पवित्र जंगलों, ग्लेशियर से बहने वाली नदियों और हमेशा रहने वाली इंसानी भावना का एक इलाका।

स्वर्ग की सीढ़ियाँ धीरज पर एक ध्यान है— एक ऐसी ज़मीन का रिकॉर्ड जहाँ हर घाटी सच में स्वर्ग की ओर एक सीढ़ी है।

द वाइल्ड ग्रीन अर्थ (पूर्वी अरुणाचल)

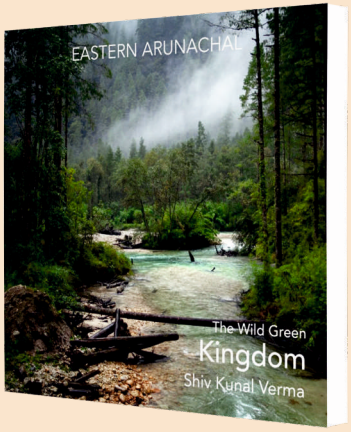

अरुणाचल ट्रिलॉजी को पूरा करते हुए, *द वाइल्ड ग्रीन अर्थ* भारत के पूर्वी इलाकों को अन्वेषित करती है— जहां लोहित और दिबांग नदियां धुंध वाले ऊंचे इलाकों से ट्रॉपिकल घाटियों में उतरती हैं।

यह मिश्मी, खाम्पटी और सिंगफो समुदायों की बहुतायत और मज़बूती का जश्न मनाती है— ये संस्कृति पृथ्वी के सबसे समृद्ध पारिस्थितिकी क्षेत्र में से एक में पुस्पित-पल्लवित हैं। नमदाफा के रेनफॉरेस्ट से लेकर नामसाई के गोल्डन पैगोडा तक, कहानी में जीवनशक्ति और असुरक्षा दोनों को रेखांकित किया गया है।

द वाइल्ड ग्रीन अर्थ अरुणाचल के जीवंत बॉर्डर को एक ट्रिब्यूट है— जहां जंगल और नदी पहचान और उम्मीद के दो रक्षक बने हुए हैं।

विशिष्ट संकलन

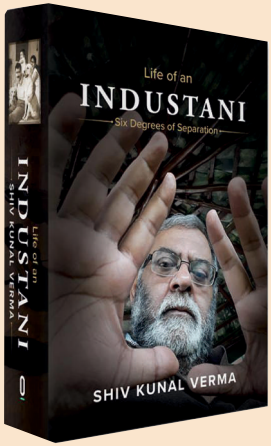

एक तेज़ी से आगे बढ़ने वाली कहानी जो एक संकट से दूसरे संकट की ओर ले जाती है, *इंडसतानी* भारत के उथल-पुथल भरे 1980 और 1990 के दशक का एक गहन वर्णन करती है।

बहुत ईमानदार और अक्सर खुद को नीचा दिखाने वाली, यह एक ऐसी अनोखी फर्स्ट-पर्सन कहानी है जिसमें रिपोर्टिंग, सोच और आयरनी का मेल है — उन घटनाओं पर एक अंदरूनी नज़र जिसने एक पीढ़ी को बनाया। सिनेमाई तेज़ी के साथ लिखी गई यह किताब एक ऐसे लेखक के बनने के बारे में बताती है जो बाद में भारत की मिलिट्री और ज्योग्राफिकल सीमाओं को उसी साफ़गोई के साथ लिखेगा।

इंडसतानी को आसानी से बांटा नहीं जा सकता। यह कुछ यादें हैं, कुछ कहानियाँ — और पूरी तरह से, बिना किसी शक के, **शिव कुणाल वर्मा** की अपनी कहानी है।

वर्मा के शुरुआती और सबसे बड़े बड़े संकलनों में से एक, *ओशन टू स्काई: इंडिया फ्रॉम द एयर*, उपमहाद्वीप का एक नया फ़ोटोग्राफ़िक इतिहास है — बर्फ़ से ढके हिमालय और पटकाई के पन्ना जैसे जंगलों से लेकर राजस्थान के रेगिस्तान और पश्चिम के सियादरी तक।

फ़ाइटर एयरक्राफ़्ट पर 350 से ज़्यादा उड़ानें भरने के साथ-साथ फ़िक्स्ड और रोटरी-विंग प्लेटफ़ॉर्म पर बड़े मिशन करने के बाद, वर्मा भारत की हवाई ज्योग्राफी में एक अनोखा आम नागरिक नज़रिया लेकर आए। बाद में मिलिट्री वर्ल्ड गेम्स (2007) के साथ उनके सहयोग ने ज़मीन, उसके रक्षकों और उसकी कहानियों के साथ इस जुड़ाव को और बढ़ाया।

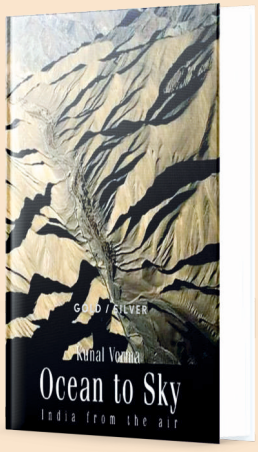

आने वाली किताबें

किताब का नाम	लॉन्च का अनुमानित साल
1. कारगिल-25: सचित्र वर्णन	2026
2. 1971: एन ईस्टर्न ब्लिट्ज़क्रीग	2026
3. लॉन्ग रोड टू सियाचिन (पुनर्संशोधित)	2026
4. लॉन्ग रोड टू सियाचिन (हिंदी)	2026
5. बियॉन्ड द रेन शैडो	2026

शिव कुणाल वर्मा

लेखक, फोटोग्राफर और फिल्ममेकर

1960 में देहरादून में एक आर्मी परिवार (2 राजपूत) में जन्मे शिव कुणाल वर्मा एक लेखक, फोटोग्राफर और फिल्मनिर्माता हैं, जिन्होंने वन्य जीवन और आर्म्ड फोर्स से लेकर भारत के भूगोल और सरहद तक, अलग-अलग थीम पर कुछ सबसे मशहूर फिल्में और किताबें बनाई हैं। उनकी *नॉर्थईस्ट ट्रिलॉजी* न सिर्फ सात राज्यों बल्कि सिक्किम और पश्चिम बंगाल के उत्तरी इलाकों को भी आलेखित करती है।

उनके दादा प्रोविजनल सर्विसेज में एक सिविल सर्वेंट थे, जो सेंट्रल प्रोविंस और बरार कैडर से थे, जबकि उनके पिता, अशोक कल्याण, इंडियन आर्मी में मेजर जनरल के पद से रिटायर हुए थे। उनकी मां, उषा हून, एक शिक्षिका थीं। मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से ग्रेजुएट वर्मा ने सेंट जोसेफ एकेडमी और द दून स्कूल, देहरादून से पढ़ाई की।

उन्होंने कश्मीर और ज़ांस्कर-लद्दाख इलाके के बीच ट्रेकिंग रूट खोलकर अपना करियर शुरू किया। *इंडिया टुडे* और *द एसोसिएटेड प्रेस* के साथ कुछ समय काम करने के बाद, उन्होंने सैंक्चुअरी फिल्म्स के लिए *प्रोजेक्ट टाइगर* टेलीविज़न सीरीज़ को निर्देशित किया और फिल्माया, और बाद में दीप्ति भल्ला के साथ मिलकर *कलीडोइंडिया* की स्थापना किया। 1992 में, उन्होंने इंडियन एयर फ़ोर्स के लिए सॉल्ट ऑफ़ द अर्थ शूट और प्रोड्यूस की — यह एक डॉक्यूमेंट्री है जो मिलिट्री फ़िल्ममेकिंग में एक बेंचमार्क बनी हुई है। इसके बाद नेवी और आर्मी पर फ़िल्मों की एक सीरीज़ आई, जिसका अंत कारगिल वॉर पर एक फ़िल्म के रूप में हुआ।

उन्होंने नेशनल डिफ़ेंस एकेडमी *(द स्टैंडर्ड बेयरर्स)* और इंडियन मिलिट्री एकेडमी *(मेकिंग ऑफ़ ए वॉरियर)* पर भी फ़िल्में बनाई हैं। 2001–02 में, उन्होंने NDA के साथ प्रोड्यूस की गई *आकाश योद्धा* को डायरेक्ट किया — जिसका प्रीमियर डिस्कवरी चैनल पर *डिस्कवर इंडिया सीरीज़* के हिस्से के तौर पर हुआ था। उसी साल, उन्होंने इंडियन एयर फ़ोर्स *(सूर्यकिरण)* और रॉयल एयर फ़ोर्स *(रेड एरोज़)* की एरोबैटिक टीमों को फ़िल्माया, और दोनों टीमों के साथ उड़ान भरने वाले पहले कैमरामैन बने।

उनके दूसरे कामों में वॉर कॉलेज, महू और कॉलेज ऑफ़ डिफ़ेंस मैनेजमेंट, हैदराबाद पर फ़िल्में शामिल हैं। उन्होंने लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (*तेजस*) पर भी पहली फ़िल्म बनाई। फाइटर, ट्रांसपोर्ट और हेलीकॉप्टर में सैकड़ों घंटे उड़ान भरने के बाद, वह आज देश के सबसे अनुभवी एरियल कैमरामैन में से एक हैं।

अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए, जिन्होंने 'रिवर्स ऑफ़ साइलेंस', 'ब्लड ऑन द स्नो' और 'द ब्रिज ऑन द रिवर मेघना' लिखी थीं, शिव कुणाल वर्मा की पहली किताब, 'ओशन टू स्काईः इंडिया फ्रॉम द एयर', रोली बुक्स ने प्रकाशित की थी— यह एक नई फोटोग्राफिक यात्रा थी जिसमें फाइटर्स, फिक्स्ड-विंग एयरक्राफ्ट और हेलीकॉप्टर के कॉकपिट से उपमहाद्वीप को कैप्चर किया गया था।

कैलिडोइंडिया बैनर के तहत, उन्होंने 2011 में 'द नॉर्थईस्ट ट्रिलॉजी' रिलीज़ की, जिसे कई भारतीय शहरों में लॉन्च किया गया। इसके बाद 2010 में 'द लॉन्ग रोड टू सियाचिन' रूपा एंड कंपनी के साथ आई, और 2013 में, 'करेज एंड कन्विक्शन'— जिसे जनरल वी. के. सिंह के साथ मिलकर लिखा गया था— एलेफ ने प्रकाशित की। उसी प्रकाशक ने बाद में '1962ः द वॉर दैट वाज़ नॉट' और '1965ः ए वेस्टर्न सनराइज़' रिलीज़ कीं।

इनमें से हर किताब को अपने विषय पर प्रमाणित माना गया है, और '1962' को प्रसिद्ध डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था। 2018 में, वर्मा ने प्लान की गई सदर्न ट्रिलॉजी के हिस्से के तौर पर तमिलनाडु और पुडुचेरी रिलीज़ की। 2017 से, उन्होंने स्कूलों में मिलिट्री हिस्ट्री लाने के लिए काम किया है — एक विज़न जो फोर्ट्रेस इंडिया मूवमेंट में बदल गया है, जिसने देश भर के इंस्टीट्यूशन्स की समग्र राष्ट्रीय जागरूकता को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

2022 में, ब्लूवन इंक ने इंडसतानीः सिक्स डिग्रीज़ ऑफ़ सेपरेशन पब्लिश की, जो आज के भारत पर एक गहरी व्यक्तिगत सोच है — यह ऑटोबायोग्राफी कम और हिस्ट्री, आइडेंटिटी और टाइम के ज़रिए एक अंदरूनी सफ़र ज़्यादा है।

वह अपने चार कुत्तों और छह बिल्लियों के साथ कुल्लू के बंदरोल में रहते हैं।

नवीनतम संकलनो में योद्धा । और योद्धा ।। — उपमहाद्वीप की सचित्र मिलिट्री हिस्ट्री — और द अरुणाचल ट्रिलॉजी शामिल हैं, जिसे दस भाषाओं में रूपान्तरित किया जा रहा है और राज्य एवं राष्ट्राध्यक्षों को दिया जा रहा है। आने वाली पुस्तक में 1971ः बैटल्स दैट शेप्ड द रिपब्लिक और कारगिल वॉर पर एक इलस्ट्रेटेड बुक शामिल हैं, दोनों को एलेफ 2026 में प्रकाशित करेगा।

अरुणाचल प्रदेश के गवर्नर, जनरल के. टी. परनाइक, तीन वॉल्यूम वाली अरुणाचल सीरीज़ की स्टडी कर रहे हैं, जो फ्रंटियर की मज़बूती और जोश का एक विज़ुअल सबूत है। नीचे, वेस्टर्न आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनोज कुमार कटियार — जो राजपूत रेजिमेंट के कर्नल भी हैं, यह पोस्ट कभी लेखक के पिता के पास थी— सैनिकों और कहानीकारों की पीढ़ियों के बीच अटूट रिश्ते को दिखाते हैं, जिन्होंने भारत के एक ही विचार की सेवा की है।

***फोर्ट्रेस इंडिया**, असल में, उस कंटिन्यूटी के बारे में है — समय के साथ याद, ड्यूटी और समझ की सहनशक्ति। कहानी जारी हैष्ठ*

आगामी पुस्तकें

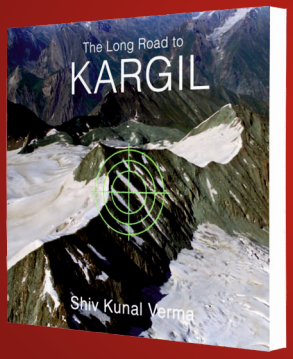

अभियान में भागीदार बने

फोर्ट्रेस इंडिया का हिस्सा बनें—यह एक देशव्यापी पहल है– जो हमारी ज़मीन, हमारे इतिहास और नागरिकों के तौर पर हमारी साझा ज़िम्मेदारी के बारे में जागरूकता पैदा करती है।

फोर्ट्रेस इंडिया

रजिस्टर करें

www.fortressindia.in/register

(साइन अप करने और एजुकेशनल प्रोग्राम, सेमिनार और पब्लिकेशन पर अपडेट पाने के लिए QR कोड स्कैन करें।)